वार्तालाप नंबर 533, हैदराबाद (आं.प्र.), ताः 12.3.08
Disc.CD No.533, dated 12.03.08 at Hyderabad (Andhra Pradesh)

जिज्ञासु – बाबा, अभी जो मुरली चली ना, उसमें कहा गया है – पहले ये ब्रह्मा सुनता है फिर समझके तुमको समझाएगा। माने ब्रह्मा दो हैं ऐसे कहा है। एक व्यक्त ब्रह्मा, एक अव्यक्त ब्रह्मा। तो फिर उस समय जो कहा गया, भविष्य में आने वाले उस ब्रह्मा के लिए बोला क्या?
बाबा – पहला ब्रह्मा कौन है? पहला ब्रह्मा प्रजापिता है। तो पहले वह समझेगा कि पहले कोई दूसरा समझेगा?
जिज्ञासु – मगर उनका तो शरीर आदि में छूट गया ना।
बाबा – आदि में छूट गया; लेकिन समझा कि नहीं उसने? कि बिना समझे साक्षात्कारों का अर्थ समझाय दिया? तो जैसे बीजरूप में साक्षात्कारों का अर्थ समझाया ऐसे ही डिटेल में भी समझता है और फिर डिटेल में समझाता है।

Student: Baba, in the Murli that was narrated just now, it has been said, first this Brahma listens, then he understands it and then he will explain to you. It means that it has been said that Brahma are two. One is manifest (*vyakt*) Brahma and one is unmanifest (*avyakt*) Brahma. So, whatever was said at that time, was it said for the Brahma who was going to come in the future?
Baba: Who is the first Brahma? The first Brahma is Prajapita. So, will he understand first or will anyone else understand first?
Student: But he left his body in the beginning, didn't he?
Baba: He left his body in the beginning, but did he understand or not? Or did he explain the meaning of visions without understanding it himself? So, just as he explained the meaning of visions in a seed form, similarly he understands in detail as well and then explains it in detail.

समय – 01.18
जिज्ञासु – बाबा, एक अव्यक्त वाणी में कहा है – विचित्र बाप, विचित्र लीला और विचित्र स्थान ये देखकर हर्षित हो गये। माना विचित्र लीला क्या है?
बाबा – विचित्र किसे कहते हैं? वि माने विपरीत, चित्र माना चित्र, जो चित्र के विपरीत हो। अर्थात् ऐसी लीला जो चित्र में एक्युरेट चित्रित न की जा सके। बाप जो लीला करते हैं, वो चित्र में चित्रित नहीं की जाती है । कृष्ण की जो लीलाएँ दिखाई हैं, वो बाप की लीलाएँ नहीं हैं क्या? मक्खन चुराया, गोपियों को भगाया, ये किसकी लीला है? कृष्ण की लीला है, दादा लेखराज की लीला है या बाप की लीला है? बाप की लीला है। लेकिन चित्र में चित्रित नहीं की गई है। चित्र में चित्रित कृष्ण को कर दिया है।

Time: 01.18
Student: Baba, it has been said in an Avyakta Vani, the unique (*vichitra*) Father became pleased on seeing the unique drama and the unique place. I mean to say what is this unique drama (*vichitra leela*)?
Baba: What is meant by '*vichitra*'? *Vi* means *vipreet* (opposite), *chitra* means picture. Something that is opposite to a picture, i.e., an act which cannot be picturised accurately in a picture. The act that the Father performs is not picturized in a picture. The acts of Krishna which have been depicted, are they not the Father's acts? He stole the cream/butter, he made the *gopis* (friends of Krishna) to elope whose acts are these? Are they the acts of Krishna, the acts of Dada Lekhraj or are they the acts of the Father? They are the acts of the Father. But they have not been picturized in a picture. Krishna has been picturised in the picture.

अच्छा, भक्तिमार्ग के चित्रों में शंकर को चित्रित कर दिया है। लेकिन शंकर ने मक्खन चुराया, गोपियों को भगाया, ये बात तो आई नहीं है। क्या बात आई है? शंकर के लिए तो मुरली में कह दिया – शंकर क्या करता है? कुछ भी नहीं। शंकर कर्मइन्द्रियों से कोई काम करता ही नहीं। अरे! जब शंकर कोई काम करता ही नहीं है, तो फिर भक्तिमार्ग में विष पीते हुए क्यों दिखाया गया? दिखाया गया है या नहीं दिखाया गया? दिखाया गया है; लेकिन वो एक्युरेट चित्र है या काल्पनिक है? वो काल्पनिक चित्र बनाया हुआ है जिसका स्थूल अर्थ निकलता है कि विष पीने से लोग मर जाते हैं; परंतु वो विष पीता है तो मरता नहीं है। वो हद का विष है या बेहद विषय–विकारों का विष है? ये तो बेहद विषय–विकारों का विष है। और वो विष कोई मुख से नहीं पिया जाता है। मुख इन्द्रिय से पिया जाता है क्या? वो तो कामेन्द्रिय की बात है। और वो कामेन्द्रिय जो है, वो तो शिव को दिखाई जाती है। मंदिर में पूजा करते हैं, तो किसका लिंग पूजा जाता है? शिव लिंग पूजा जाता है। शंकर लिंग पूजा जाता है क्या? नहीं। शिव लिंग पूजा जाता है। तो एक्युरेट चित्रों में उस बात का चित्रण नहीं किया गया है। जो चित्रकार हैं वो पूरी बात को समझते ही नहीं हैं; इसलिए वो चित्रों में समझाय भी नहीं सकते। अभी तो हम समझते भी हैं तो दूसरों को समझाय भी सकते हैं।

OK, in the path of worship Shankar has been picturized. But it has not been mentioned that Shankar stole cream, made *gopis* to elope. What has been mentioned in it? It has been said about Shankar in the Murli 'What does Shankar do? Nothing.' Shankar does not perform any task through the bodily organs at all. Arey! When Shankar does not perform any task at all, then why has He been shown drinking the poison in the path of worship? Has he been shown (drinking poison) or not? He has been shown (drinking poison). But is it an accurate picture or is it imaginary? It is an imaginary picture whose literal meaning is that people die by drinking poison, but if he drinks poison, he does not die. Is it poison in a limited sense or poison of vices in an unlimited sense? This is the poison of vices in an unlimited sense. And that poison is not consumed through the mouth. Is it consumed through the mouth organ? It is a matter of the sex organ. And that sex organ is shown in respect of Shiv. When people worship in the temple, whose *ling* (phallus) is worshipped? Shiv's *ling* is worshipped. Is Shankar's *ling* worshipped? No. *Shivling* is worshipped. So, that has not been shown accurately in the pictures. The artists do not understand it completely; that is why they can't explain it (accurately) in the pictures either. Now we can understand as well as explain it to others.

समय – 4.45
जिज्ञासु – शंकर तो सिर्फ याद करता है। कुछ नहीं करता है। मगर हर एक को ऊँच पद पाने के लिए चारों सबजेक्ट में पास होना ही है।
बाबा – फिर इतनी प्रैक्टिस होनी चाहिए ना। याद कौन करेगा? जिसको सौ परसेन्ट ज्ञान होगा वो याद करेगा या जिसको अधूरा ज्ञान होगा वो याद करेगा? सौ परसेन्ट ज्ञान बुद्धि में बैठा होगा तो बुद्धि याद में भी लगेगी। कर्म करते भी बुद्धि याद में लगेगी। कर्म न करते भी बुद्धि याद में लगेगी। कोई तो ऐसे होते हैं जीवन में बिल्कुल फ्री हैं। कोई धंधा–धोरी न करें तो भी फ्री हैं। बूढ़े माँ–बाप का कोई बंधन नहीं है। पत्नी, बाल–बच्चों को पालना करने का भी कोई बंधन नहीं है, इतनी प्रापर्टी भरी पड़ी है। फिर भी बुद्धि याद में नहीं लगती है। इससे क्या साबित होता है? इससे साबित होता है कि ज्ञान इतना बुद्धि में बैठा ही नहीं।

Time: 4.45
Student: Shankar just remembers. He does not do anything. But everyone has to definitely pass in all the four subjects to achieve a high post.

Baba: Then one should practice so much, shouldn't one? Who will remember? Will the one, who has hundred percent knowledge remember or will the one, who has incomplete knowledge, remember? If hundred percent knowledge is there in the intellect, then the intellect will also be busy in remembrance. The intellect will be busy even while performing actions. Even while not performing actions the intellect will be busy in remembrance. Some are such that they are completely free in their life. They are free even if they do not do any business. There is no bondage of (serving) the aged parents. They possess so much property that there is no bondage of sustaining the wife and the children. Even so the intellect is not able to remember (Baba). What does it prove? It proves that the knowledge has not fitted in the intellect to that extent at all.

समय – 5.54
जिज्ञासु – बाबा एक मुरली प्वाइन्ट है – "कोई तो एडवान्स में भी जाएँगे। श्री कृष्ण के माँ–बाप को भी एडवान्स में जाना चाहिए; क्योंकि वहाँ कृष्ण को गोद में लेना है। ये तो बड़ी गुह्य बातें हैं।" माना ये संगमयुगी कृष्ण के लिए कहा गया है या सतयुगी कृष्ण के लिए? शास्त्रों में तो संगमयुगी कृष्ण का यादगार है ना।
बाबा – लेकिन संगमयुगी शब्द तो नहीं आया है।
जिज्ञासु – लेकिन बाबा, ये माँ–बाप कौन हुए? माँ–बाप तो यही हुए ना राम बाप और.....।
बाबा – महिमा किसकी है? शास्त्रों में जो कृष्ण की महिमा है वो कौन–से कृष्ण की महिमा है? वो तो संगमयुगी कृष्ण की महिमा है। ये बात हमें बाबा ने बताई है। भक्तिमार्ग वाले इस बात को नहीं जानते हैं।

Time: 5.54
Student: Baba, there is a Murli point, "Some will also go in advance. Shri Krishna's parents should also go in advance because they have to take Krishna in their lap there. These are very deep issues." I mean to say, has it been said for the Confluence Age Krishna or the Golden Age Krishna? There is a memorial of Confluence Aaged Krishna in the scriptures, isn't there?
Baba: But the word 'Confluence Age' has not been mentioned.
Student: But Baba, who are these parents? Are the parents these Father Ram and ….
Baba: Whose glory is it? The glory of Krishna in the scriptures is about which Krishna? It is a glory of the Confluence Aged Krishna. Baba has told this to us. Those belonging to the path of worship do not know this.

समय – 7.17
जिज्ञासु – बाबा, हिस्ट्री में ऐसा कहा गया है – आसमान में उड़ने वाले एरोप्लेन का इन्वेन्शन करने के लिए ढेर सारे लोगों ने कोशिश की। मगर वो काम सिर्फ राइट ब्रदर्स से सम्पन्न हुआ।
बाबा – राइट ब्रदर्स !
जिज्ञासु – एरोप्लेन को बनाने वाला साइन्टिस्ट राइट ब्रदर्स। उसके पहले ढेर सारे लोग कोशिश कर रहे थे मगर उनका शरीर छूट गया। यहाँ बेहद में कैसे लागू होता है कि राइट ब्रदर्स से ऐरोप्लेन चला?

Time: 7.17
Student: Baba, it has been said in the history, many people tried to invent the aeroplane that flies in the sky. But that task was accomplished only by the Wright brothers.
Baba: Wright brothers!

Student: The scientists Wright brothers who made the (first) aeroplane. Before that numerous people were trying (to invent aeroplane) but they left their bodies. Here, how does the invention of the aeroplane by the Wright brothers apply in an unlimited sense?

बाबा – आत्मा–आत्मा सब भाई–भाई हैं या नहीं? सब आत्माएँ भाई–भाई हैं। लेकिन सब सौ परसेन्ट राइटियस हैं या सब सौ परसेन्ट अनराइटियस हैं? जो भी 500–700 करोड़ आत्मारूपी भाई–भाई ब्रदर्स हैं, उनमें सब राइटियस ब्रदर्स हैं या सारे के सारे अनराइटियस ब्रदर्स हैं? अनराइटियस ब्रदर्स हैं। राइटियस फिर कौन हैं? जिसकी सत्य नारायण की कथा गाई जाती है, वो ही आदि से लेकर के अंत तक राइटियस होकर के रहता है, आत्मिक स्थिति में रहता है। इसलिए अंतिम जन्म में जब बाप आते हैं, तो विष्णु के द्वारा ही कार्य की शुरुआत होती है। आदि के जन्म में भी विष्णु और अंत के जन्म में भी विष्णु बन करके रहता है। तो राइटियस ब्रदर हुआ।

Baba: Are all souls brothers or not? All the souls are brothers. But is everyone hundred percent righteous or is everyone hundred percent unrighteous? Are all the 500-700 crore soul-form brothers, righteous brothers or are all of them unrighteous brothers? They are unrighteous brothers. Then who is righteous? The one whose story is famous as the 'story of Satya Narayan' remains righteous from the beginning to the end, he remains in a soul conscious stage. That is why when the Father comes in the last birth, the task begins only through Vishnu. He remains Vishnu in the first birth as well as the last birth. So, he is the righteous brother.

समय – 8.51
जिज्ञासु – बाबा, जो शिव को फॉलो करते हैं वो शैव सम्प्रदाय कहलाते हैं। जो विष्णु को फॉलो करते हैं वो वैष्णव सम्प्रदाय। फिर उत्तर भारत वाले वैष्णव सम्प्रदाय को बहुत ऊँचा समझते हैं। शैव सम्प्रदाय वालों को बहुत नीच समझते हैं। कैसे बाबा?
बाबा – क्योंकि अंतिम लक्ष्य क्या है? अंतिम लक्ष्य शिव बनना है, शिव समान बनना है या अंतिम लक्ष्य विष्णु बनना है? विष्णु बनना है।

Time: 8.51
Student: Baba, those who follow Shiv are called Shaiv community. Those who follow Vishnu are called Vaishnavite community. And the north Indians consider Vaishnav community to be very elevated. They consider the Shaiv community to be very low. How is it Baba?
Baba: It is because, what is the ultimate goal? Is the ultimate goal to become Shiv, to become equal to Shiv or is the ultimate goal to become Vishnu? It is to become Vishnu.

समय – 9.32
जिज्ञासु – बाबा मुरली प्वाइन्ट है – शिव है निराकार बाप, प्रजापिता है साकार बाप। साकार बाप के द्वारा निराकारी बाप का वर्सा तुम प्राप्त करते हो। त्रिमूर्ति बताते हैं लेकिन समझाते नहीं। शिव को उड़ा दिया। त्रिमूर्ति के चित्र में बिन्दी के रूप में तो शिव को दिखाते हैं; पर शिव को उड़ा दिया ऐसा कहा।
बाबा – शिव को उड़ा दिया माना ऊँची स्टेज में उड़ा दिया। उड़ा दिया का मतलब ये नहीं है कि नीचे रखा हुआ है। नीचे रखने की चीज़ ही नहीं है। उस स्वरूप को पहचान लिया माना पहचानने वाला खुद ही ऊँची स्टेज में चला जाता है।

Time: 9.32
Student: Baba there is a Murli point, Shiv is the incorporeal Father, Prajapita is the corporeal father. You obtain inheritance of the incorporeal Father through the corporeal father. They say 'Trimurty', but they do not explain about it. They have removed Shiv. They show Shiv in the form of a point in the picture of Trimurty, but it has been said that Shiv was removed.
Baba: Shiv has been removed means that He has been removed into the high stage. 'Removed' does not mean that He has been placed below. He is not at all a thing to be placed below. When that form has been realized, it means that the one who realizes achieves a high stage himself.

समय – 10.25
जिज्ञासु – बाबा, कुछ सेन्टेंस होता है ना, सेन्टेंस होने के बाद तेलगु, इंग्लिश, कन्नड़, तमिल इन सब में फुलस्टॉप लगाते हैं, बिन्दी लगाते हैं लेकिन संस्कृत और हिन्दी भाषा में बिन्दी नहीं लगाते। खड़ा डंडा लगाते हैं। इसमें कुछ रहस्य है क्या?
बाबा – बिल्कुल! बात पूरी हो जाए तो रुकना चाहिए ना। बात पूरी हो जाए तो पूर्णविराम होना चाहिए। बिन्दी लगाना, कॉमा लगाना, सेमीकोलन लगाना, ये पूर्णविराम नहीं हुआ। कोई भी बात कहने के बाद थोड़ा सोचने वाले को, समझने वाले को मौका देना है। इसलिए थोड़ा रुकना, फिर अगला वाक्य कहना। और बोलने वाले को भी मौका मिल जाता है कि हमने जो बोला ठीक–ठीक बोला? जो भी बोलना है सोच–समझके बोलना और दूसरे को भी समझने का मौका देना, तो पूर्णविराम कहा जाता है।

Time: 10.25
Student: Baba, there are some sentences. A full stop is written at the end of the sentences in Telugu, English, Kannada, and Tamil. But in Sanskrit and Hindi language a full stop is not written. A vertical line is written. Is there any secret in it?
Baba: Definitely! When one completes saying something, then one should stop, shouldn't one? When someone completes saying something, then there should be *poornaviraam* (complete halt; the vertical line drawn at the end of every sentence in Hindi) Writing a point (full stop), comma, semicolon is not *poornaviraam* (complete halt). After telling anything one should give a chance to the one who thinks, who understands. That is why one should pause a little and then speak the next sentence. And the speaker also gets a chance to check whether whatever he has spoken was proper? Whatever we have to speak we should speak after thinking and understanding and we should also give a chance to others to understand. Then it is called *poornaviraam.*

जिज्ञासु – समझ में नहीं आया।
बाबा – अरे! कोई बात कहनी हो तो जो भी सेन्टेन्स में बात बोली है, वो पूरी समझ करके बोलनी चाहिए ना और उससे कनेक्टेड अगली बात कहनी है तो वो भी पिछले वाक्य से अगले वाक्य की बात ताल–मेल होनी चाहिए ना। वो ताल–मेल रखने के लिए बीच में थोड़ा सोचने–समझने का मौका देना है या नहीं देना है? देना है। तो उसे कहा जाता है – पूर्णविराम। माने सोच–समझ करके हम बोलते जाएँ। ऐसे नहीं धाराप्रवाह (से) बोलते गए, बोलते गए। क्या बोलते जा रहे हैं, क्या उसका एक–दूसरे से कनेक्शन है, उसका ध्यान ही नहीं रखा और समझने वालों में भी गलतफहमी पैदा हो गई। समझाना था कुछ और उन्होंने समझ लिया कुछ और। इसलिए और भाषाओं में ये बात नहीं है। जो बाबा की भाषा है, उसमें ये खासियत है कि जो भी बाबा बात बोलते हैं, उसमें पूर्णविराम होना ज़रूरी है।

Student: I did not understand.
Baba: Arey! Whatever we have to speak, whatever we have said in a sentence should be spoken after understanding completely, shouldn't it? And if we have to say something connected with it, then there should be a connection between the last sentence and the next sentence. In order to have that connection, should we give a chance (to the listener) or not to think and understand? We have to give. So, that is called *poornaviraam*. It means that we should think and understand while speaking. It is not as if we go on speaking continuously. If we do not pay attention to what are we speaking, to whether there is a connection between any two sentences and if the listeners misunderstand it. We wanted to explain something and they understood it in a different way. That is why this does not exist in other languages. Baba's language has this specialty that a *poornaviraam* is necessary in whatever Baba speaks.

समय – 18.09
जिज्ञासु– बाबा, ईमानदार, वफादार, फरमानबरदार बनने के लिए माया विघ्न डालती है और रोक लगाती है। तो माया को भी दंड मिलेगा?
बाबा – माया को तो काम दिया हुआ है। माया बेटी को ये काम दिया हुआ है – बेटी, तुम ये काम बहुत बढ़िया करोगी। जो मेरी श्रीमत पर नहीं चलते हैं उनको खूब अच्छी तरह से फतकाओ। चोर–डकैतों को जो चोरी–डकैती करने वाला है वो जल्दी पकड़ेगा या कोई साधारण साहूकार का बच्चा पुलिस लाइन में भर्ती कर लिया जाए वो पकड़ेगा? कौन पकड़ेगा? जो चोरी–डकैती करने में पहले से ही माहिर हो, जिसके कुल में यही धंधा होता चला आया हो, खून में समाया हुआ हो, वो ये धंधा अच्छा करेगा। इसलिए माया बेटी चाहे बीजरूप आत्माओं में हो और चाहे बेसिक आधारमूर्त आत्माओं में हो, उसका चुनाव इस्लाम धर्म से ही होता है। इस्लाम धर्म जन्म–जन्मांतर का व्यभिचारी धर्म है या अव्यभिचारी धर्म है? व्यभिचारी धर्म है।

Time: 18.09
Student: Baba, *maya* creates obstacles and applies a break in becoming sincere, loyal, and obedient. So, will maya too receive a punishment?
Baba: *Maya* has been assigned a task. The daughter *maya* has been given a task, Daughter, you will perform this task very nicely. Shake very well those who do not follow my shrimat. Will a thieves and robbers be caught quickly by those who steal and rob or will a son of an ordinary prosperous person, who has been recruited into the police line, catch him (quickly)? Who will catch him (quickly)? The one who is expert in stealing and robbery, the one whose clan has been doing this occupation, the one in whose blood this (trait) is assimilated, will perform this task nicely. That is why daughter maya, whether it is in the seed-form souls and whether it is in the basic root-form (*aadhaarmoorth*) souls, is selected from the Islam religion. Is Islam an adulterous religion (*vyabhichaari dharma*) for many births or is it an unadulterous religion? It is an adulterous religion.

समय – 19.36
जिज्ञासु – बाबा, एक अव्यक्तवाणी में प्वाइन्ट है – तुम बच्चों को बाप अकेला छोड़कर नहीं जाता। तो बाप और बच्चों का जो घर है वो एक ही है तो साथ में ही ले जाएगा। तो पहले–पहले जिनका नम्बर डिक्लेअर हो गया उनको सब तैयार होने तक इन्तजार करना ही पड़ेगा ना।
बाबा – तैयार तो अभी एक भी नहीं हुआ है।
जिज्ञासु– दो तो डिक्लेअर हो गए हैं ना?
बाबा – डिक्लेअर होना अलग बात। लेकिन अभी सीट पर सेट एक भी नहीं हुआ। सीट पर सेट सबसे पहले कौन–सी आत्मा होगी?

जिज्ञासु – राम वाली आत्मा।

Time: 19.36
Student: Baba, there is a point in an Avyakta Vani, the Father does not go by leaving you children alone. So, the Father's home and the children's home is the same; so, He will definitely take us along. So, the ones whose number was declared first of all, will have to wait till everyone becomes ready, won't they?
Baba: Nobody has become ready so far.
Student: Two have been declared, haven't they?
Baba: Being declared is a different thing. But nobody has become set in his seat now. Which soul will become set on its seat first?
Student: The soul of Ram.

बाबा – राम तो बाप कहा जाता है। बाप कभी अपने को आगे नहीं करता। बाप तो पक्का फालो फादर है। वो अपने को आगे नहीं करेगा। किसको आगे करता है? बाप बच्चे को आगे करता है। तो कौन पहले आगे जाएगा? बच्चे को साथ लेकर जावेगा। इसलिए पहले बच्चा तैयार होना चाहिए और उस बच्चे को परवरिश देने वाले, तैयार करने वाले, कराने वाले, तैयार करने में सहयोग देने वाले एक दो नहीं हैं। पूरा परिवार है। कितने लोगों का परिवार है? आठ का परिवार है। और वो सम्पन्न परिवार है। तो जो भी श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ माला है, वो माला की लड़ी पारिवारिक ईकाई के रूप में एक साथ जावेगी या आगे–पीछे जावेगी? अन्तर तो होगा। लेकिन एक सेकेन्ड का भी अन्तर नहीं।

Baba: Ram is called the father. The father never keeps himself ahead. The father is a firm follower of the Father. He will not keep himself ahead. Whom does he keep ahead? The father keeps the child ahead. So, who will move ahead first? He will take the child along. That is why first of all the child should become ready and those who sustain that child, make him ready, enable him to become ready, those who help in readying him are not just one or two. It is a complete family. It is a family of how many people? It is a family of eight . And it is an accomplished family. So, will the most elevated rosary (*mala*), the string (*lari*) of the rosary move ahead as a single family unit or will it move one behind the other? There will definitely be a difference. But there is no difference of even a second.

समय – 22.40
जिज्ञासु – बाबा, आत्मा पहले अपने 84 जन्मों का पार्ट जानेगी या बाप के 84 जन्मों का पार्ट जानेगी?
बाबा – बाप का जिसने जान लिया उसका अपने का तुरंत पता लगेगा।
जिज्ञासु – मगर पहले तो बाप का ही जानना होगा।
बाबा – हाँ जी, बिल्कुल। बाप के साथ ही आत्मा का पार्ट जुड़ा हुआ है ना। सन शोज फादर, फादर शोज सन्स। ऐसे थोड़े ही बच्चा बाप के पार्ट को प्रत्यक्ष कर ले। तो बच्चा आगे बढ़ गया कि बाप आगे बढ़ गया? कौन आगे बढ़ गया? बच्चा आगे बढ़ गया। लेकिन ऐसा तो होता नहीं। बाप सर्वशक्तिवान है और बच्चे नम्बरवार शक्तिवान हैं। तो बाप बच्चों को पहले बुद्धि का साक्षात्कार कराता है।

Time: 22.40
Student: Baba, will a soul know about its own part of 84 births first or will it know about the parts of 84 births of the father first?
Baba: The one who came to know about the father's part will immediately know about his own.

Student: But first of all he would have to know about the father's part.
Baba: Yes, definitely. The part of the soul is connected with (the part of) the father , isn't it? Son shows father, father shows sons. It is not as if the child reveals the part of the father. So, (in that case) did the child move ahead or did the father move ahead? Who moved ahead? The child moved ahead. But it does not happen like this. The Father is almighty and the children are numberwise mighty. So, the Father causes the vision of the intellect to the children first.

समय – 23.46
जिज्ञासु – बाबा, एक अव्यक्त वाणी का प्वाइन्ट है। अभी तो बाप का रूप चल रहा है। बाप तो रहम दिल है। सुनते हुए, देखते हुए भी रहम कर रहा है। माना ये 76 में जिन बच्चों ने बाप को प्रत्यक्ष किया, उन लोगों के लिए कहा गया है क्या?
बाबा – हाँ, ठीक है। दिल्ली वालों के ऊपर तो सबसे ज्यादा रहम होना चाहिए क्योंकि उन्होंने ऐसे समय में सहयोग दिया जिस समय दुनियाँ में कोई भी सहयोगी बाप का नहीं था। जो बीज ऐसे समय पर बोया जाता है जिस समय कोई भी बीज बोने वाला नहीं है और मौसम बीज बोने का हो चुका है। तो समय पर बोया हुआ बीज ज्यादा फल देने वाला होता है। इसलिए 76 में जिन आत्माओं ने पहली–पहली बार सहयोग दिया, भले बहुत थोड़ा सहयोग दिया लेकिन उस सहयोग की भी बहुत वैल्यू है। इसलिए अव्यक्त वाणी में बोला हुआ है – "दिल्ली वालों के लिए बाप अंत तक सहयोग देने के लिए बाँधा हुआ है"।

Time: 23.46
Student: Baba, there is a point in an Avyakta Vani. Now the (part in the) form of father is going on. The father is merciful. In spite of listening (about everything), in spite of seeing (everything) He is showing mercy. Does it mean that this has been said about the children who revealed the father in 1976?
Baba: Yes, it is correct. Maximum mercy should be shown upon the residents of Delhi because they cooperated at such a time when the father did not have any helper in the world. When a seed is sown at a time when there is no one to sow the seed, and when it is the climate to sow the seed, then the seed that is sown in time gives more fruits. That is why, the souls who first of all helped in 1976, although they rendered very little help, even that help is very valuable. That is why it has been said in an Avyakta Vani, "The Father is bound to help the residents of Delhi till the end."

समय – 25.16
जिज्ञासु – बाबा, शास्त्रों में गायन है – विश्वामित्र ने त्रिशंकू स्वर्ग स्थापन किया। तो ये त्रिशंकू स्वर्ग संगमयुगी स्वर्ग को ही कहते हैं ना?
बाबा – ये लटका हुआ नहीं है। त्रिशंकू एक जगह ठहर गया या उतरती कला में आया या चढ़ती कला में जा रहा था? त्रिशंकू तो ठहरा हुआ है। और संगमयुगी जो पद है वो कोई ठहरा हुआ नहीं है। ये तो ऊँचा चढ़ता ही चला जाएगा, चढ़ता ही चला जाएगा। ये चढ़ती कला का युग है।

Time: 25.16
Student: Baba, it is famous in the scriptures that Vishwamitra established *Trishanku* heaven (according to Hindu mythology sage Vishwamitra sent a king named Trishanku to heaven with his spiritual powers, but the king was not allowed to enter heaven by the deity king and hence he remained hanging in between the Earth and the heaven; enraged over this Vishwamitra created another heaven for the king in between the Earth and the heaven). So, the Confluence Age heaven itself is said to be *Trishankhu* heaven, isn't it?

Baba: This is not hanging. Did Trishanku remain (hanging) at one place or did he descend or was he ascending? Trishanku is stagnant. But the confluence Age post is not stagnant. It will go on rising high, go on rising. This is an Age of rising celestial degrees.

समय – 26.05
जिज्ञासु– लक्ष्मी नारायण का दिव्य जन्म हुआ। शरीर का जन्म.....।
बाबा – लक्ष्मी–नारायण का दिव्य जन्म हुआ। शरीर का जन्म सतयुग में होगा या संगमयुग में होगा? कहाँ होता है? सतयुग, त्रेता, द्वापर, कलियुग में शरीर का जन्म होता है या संगमयुग में शरीर का जन्म होता है? कहाँ होता है?
जिज्ञासु – पता नहीं।
बाबा – अरे! पता नहीं? क्यों? संगमयुग में शिवबाबा आ करके दिव्य जन्म लेते हैं या शरीर का जन्म लेते हैं?
जिज्ञासु – दिव्य जन्म।

Time: 26.05
Student: Lakshmi-Narayan took a divine birth. The birth of the body….
Baba: Lakshmi-Narayan took a divine birth. Will the body's birth take place in the Golden Age or in the Confluence Age? Where does it take place? Does the body take birth in the Golden Age, Silver Age, Copper Age, and Iron Age or in the Confluence Age? Where does it take place?
Student: I don't know.
Baba: Arey! Don't you know? Why? Does Shivbaba come and take a divine birth or a physical birth in the Confluence Age?
Student: A divine birth.

बाबा – जब शिवबाबा ही आ करके दिव्य जन्म लेते हैं तो बच्चों को कौन–सा जन्म देंगे? दिव्य जन्म ही देंगे।
जिज्ञासु – एक ही पर्सनालिटी में दो आत्माएँ हैं ना। कैसे?
बाबा – भूत–प्रेत प्रवेश नहीं होते हैं? जब भूत–प्रेत प्रवेश कर सकते हैं, तो शिवबाप प्रवेश नहीं कर सकते? और ब्रह्मा की सोल प्रवेश नहीं कर सकती? कर सकती है। तो एक शरीर में दो आत्माएँ नहीं हो सकती क्या? अरे! दो की तो बात छोड़ो चौदह–चौदह, बारह–बारह, बीस–बीसियों आत्माएँ प्रवेश करेंगी क्योंकि इतने जो शरीर छोड़ेंगे, ढेर के ढेर, 500–700 करोड़ शरीर छोड़ने वाले हैं। अचानक मौत होगी। भूकंप आवेंगे, कितने मरेंगे। ये अचानक मौत वाले सब भूत–प्रेत बनेंगे। इनकी मुक्ति कहाँ से होगी? बच्चों में ही प्रवेश करके इनकी मुक्ति होगी। अगर बच्चे बीजरूप स्टेज वाले नहीं होंगे तो लोढ़े खाते रहेंगे। आत्माएँ फतकाती रहेंगी।

Baba: When Shivbaba Himself comes and takes a divine birth, then what kind of birth will He give to the children? He will give divine birth only.
Student: There are two souls in the same personality, aren't they ? How?
Baba: Don't ghosts and devils enter? When ghosts and devils can enter, then can't the Father Shiv enter? And can't Brahma's soul enter? It can. So, can't there be two souls in one body? Arey! Leave the matter of two (souls), fourteen, twelve, twenty souls will enter because so many will leave their bodies, 500-700 crores will leave their bodies. Sudden death will take place. The earthquakes will occur, so many will die. All these people who die suddenly will become ghosts and devils. How will they achieve salvation? They will achieve salvation only by entering the children. If the children are not in a seed-form stage, then they will keep shaking. The souls will keep shaking them.

जिज्ञासु – आत्मा का दबाव नहीं पड़ता क्या?
बाबा – दबाव पड़ता है तब तो। वो दबाव डालेगी तो पाप कर्म कराएगी। भूत–प्रेत आत्मा क्या करती है? पाप कर्म कराती है। उसका प्रभाव किसके ऊपर पड़ता है? शरीरधारी के ऊपर या जो प्रवेश करने वाली आत्मा है उसके ऊपर? शरीरधारी के ऊपर उसका दबाव पड़ेगा। अवस्था नीचे गिरती जावेगी। इसलिए उससे बचने का एक ही तरीका है – अपन को देह न समझना, अपन को आत्मा समझना। जितना आत्मिक स्थिति की प्रैक्टिस होगी, अंत में उन ईविल सोल से उतना ही बचाव का प्रबन्ध हो जावेगा। नहीं तो अटैक करती रहेंगी।

Student: Does the soul not exert its pressure?
Baba: It does exert pressure. When it exerts pressure, it makes us commit sins. What does the soul of a ghost or devil do? It makes us commit sins. On whom does it cast its influence? Is it on the person (in whom it has entered) or on the soul which enters? It will exert pressure on the person who bears the body. The stage will go on falling. That is why there is only one way to avoid it, don't consider yourself to be a body; consideryourself to be a soul. The more we practice soul conscious stage, the more we will ensure safety from evil souls in the end. Otherwise, they will continue to attack us.

जिज्ञासु – कैसे पता चलेगा?
बाबा – दो–दो बातें करेगी पता लग जाएगा कि ये .....। तीन–तीन बातें करेगी, तीन सोल हैं। चार तरह की बातें करेगी चार सोल हैं।
जिज्ञासु – किस तरह करेगी?
बाबा – किस तरह करेगी! अभी एक बात करेगी, दूसरी दूसरी बात करेगी, तीसरी तीसरी बात करेगी।

Student: How will we come to know?
Baba: When they indulge in double speak, then we will come to know that this……If they speak in three ways, (then we can think that) there are three souls. If they speak four kinds of versions, (then we can think that) there are four souls.
Student: How will it do so?
Baba: How would it do so? It will speak one thing now; the second one will speak another thing; the third one will speak a third thing.

जिज्ञासु– पहचानेंगे कैसे?
बाबा – बात से पहचाना नहीं जाएगा? एक ने एक बात की, दूसरे ने उसकी जस्ट अपोजिट बात कह दी, तीसरे ने पूरा अपोजिशन नहीं किया। थोड़ा अपोजिशन किया थोड़ी पोजिशन की बात कह दी। तो क्या साबित हुआ?
जिज्ञासु – अभी भी ऐसे ही बात करते हैं ना।
बाबा – हाँ तो मनुष्य दोगले होते हैं, दोहरा खून होता है तभी तो ऐसी बात करते हैं। दोगला नहीं होगा तो एक बात बोलेगा कि दो बातें बोलेगा?
जिज्ञासु– बचने के लिए दो बातें कहते हैं।
बाबा – बचने के लिए दो बातें कहते हैं माना झूठा हुआ ना। अगर सच्चाई है तो अपने को बचाना क्या?

Student: How will we recognize?
Baba: Can't we recognize through their words? One spoke one thing, the second one spoke just the opposite thing; the third one did not oppose completely. He expressed opposition to some extent and then spoke in position (i.e. support) to some extent. So, what did it prove?

Student: Even now they speak similarly, don't they?
Baba: Yes, people indulge in double-speak, they have two kinds of blood flowing through them; only then they speak such things. If he does not indulge in doublespeak, then will he speak one thing or two things?
Student: They speak two things to save themselves.
Baba: If they speak two things to save themselves, then they are false, aren't they ? If there is truth, then what is the need to save oneself?

जिज्ञासु – वहाँ एक ही आत्मा बता रही है ना बाबा।
बाबा– कहाँ?
जिज्ञासु – बचने के लिए।
बाबा – कोर्ट है। कोर्ट में बात पूछी जा रही है और कोई अपने बचाव के लिए सच्ची बात नहीं बोलता है। दूसरी बात बोल देता है। तो झूठा हुआ या सच्चा हुआ?
जिज्ञासु– झूठा हुआ।
बाबा – फिर? एक कथा आई है महाभारत में कि पान्डु ने स्वीकार कर लिया कि मैंने ऋषि को मारा। उनकी हत्या मेरे बाण से हुई। जबकि देखने वाला कोई नहीं था। फिर भी उसने भरी सभा में जा करके ये सच्ची बात बोल दी कि मेरे से ऐसा हो गया। तो सच्चा पान्डु हुआ.....और अगर वो चाहता तो ये भी बोल सकता था कि मेरे हाथों उसकी हत्या नहीं हुई। तो अगर झूठ बोलता है अपने बचाव के लिए, तो झूठा साबित हुआ या सच्चा साबित हुआ? झूठा हुआ।

Student: Baba, there only one soul is speaking, isn't it?
Baba: Where?
Student: To save itself.
Baba: Suppose there is a Court. If someone is being asked something in a Court and if he does not speak the truth in order to save himself; he speaks something else. So, is he a liar or a truthful person?
Student: He is a liar.
Baba: Then? There is a story in Mahabharata (epic) that Pandu accepted that he killed the sage: My arrows killed him. Whereas there was no witness. Even so he spoke the truth in public this happened through me. So, Pandu was truthful….. And if he wished he could have said that he did not kill him. So, if he speaks lies to save himself, then is he proved to be a liar or is he proved to be truthful? He is proved to be a liar.

समय – 31.43
जिज्ञासु – बाबा, यहाँ कचहरी भी होती है।
बाबा – हाँ। कचहरी का मतलब ये है – सबके सामने पूछा जाए जिसकी–जिसकी जो–जो गलतियाँ हुई हों, सभा में आकर के बताएँ, सरे आम बाजार। महावीर बन करके बताएँ कि हमसे ये गलती हुई। बेधड़क हो करके कोई सभा में अपनी पूरी गलती बता दे तो महावीर आत्मा है या कमजोर आत्मा है? महावीर आत्मा है।

Time: 31.43
Student: Baba, even here Court (proceeding) takes place.
Baba: Yes. The court (*kachahari*) means, 'If it is asked in front of everyone that whoever has committed whatever mistakes should come in the gathering and tell in front of everyone, openely; then one should tell bravely that he has committed this mistake'. If someone narrates his complete mistake in a gathering without hesitation, then is he a brave soul or a weak soul? He is a brave soul.

समय – 32.37
जिज्ञासु – शूटिंग पीरीयड में एक ही शरीर में दो आत्माएँ प्रवेश होकर पार्ट बजाएँगी, तो ब्राड ड्रामा में कैसे होगा?
बाबा – ब्राड ड्रामा में प्रवेश नहीं होते हैं क्या?
जिज्ञासु – वहाँ प्रैक्टिकल में प्रवेश नहीं होते ना।
बाबा – यहाँ प्रैक्टिकल में प्रवेश नहीं करते?
जिज्ञासु – यहाँ तो प्रैक्टिकल में होते हैं। लेकिन वहाँ तो अलग–अलग तरीके से होते हैं ना।
बाबा – यहाँ अंतर ये है कि जिसमें प्रवेश होता है, अगर वो एडवान्स ज्ञान लेने वाली आत्मा है, तो आज नहीं तो कल वो उसके ऊपर विजय प्राप्त कर लेगी। और वहाँ प्रवेश करेगी लेकिन विजय प्राप्त नहीं होगी क्योंकि बाबा की याद वहाँ होगी नहीं। इसलिए हारते ही चले जाएँगे।

Time: 32.37
Student: (It is said that) during the shooting period two souls will enter and play their parts through the same body; so how will it take place in the broad drama?
Baba: Don't they enter in the broad drama?
Student: There they do not enter in practical, do they?
Baba: Don't they enter in practical here?
Student: Here they enter in practical. But there they enter in different ways, don't they?
Baba: Here, the difference is that if the one in whom they enter is a soul which is obtaining advanced knowledge, then, if not today, at least tomorrow it will gain victory over it (i.e.over the soul that is entering). And there it will enter, but it will not gain victory (over it) because Baba's remembrance will not be there. That is why it will go on losing

समय – 33.34
जिज्ञासु – बाबा, नष्टोमोहा की परीक्षा भाई लोगों के लिए नहीं आती है क्या?
बाबा – देह का ओना ज्यादा भाइयों को होता है या कन्याओं–माताओं को देह का ओना ज्यादा होता है? कन्याओं–माताओं को देह का ओना ज्यादा होता है। तो देह का लगाव भी किसको होगा? कन्याओं–माताओं को ही देह का लगाव ज्यादा होगा। भाई तो क्या हैं? भाइयों को तो खास करके बताया है – खग्गा मछली हैं। खग्गा मछली खौलते हुए तेल में डाल दो। उसकी इतनी मोटी चमड़ी होती है कि थोड़ी देर तैरती रहेगी, तैरती रहेगी और धड़ाक से उछल के यूँ जाके गिरेगी। उनको लगाव जल्दी नहीं लगता। आज एक से लगाव लगाएँगे, कल दूसरे से लगा लेंगे, तीसरे से लगा लेंगे, चौथे से लगा लेंगे। कन्याओं – माताओं का जिनका जीवन में पहली बार जिससे संसर्ग, संबंध–संपर्क जुड़ जाता है, वो जिंदगी भर उनको कभी भूलता नहीं है। क्यों ऐसा होता है? भाई लोग क्यों भूल जाते हैं? यही कारण है।

Time: 33.34
Student: Baba, don't the brothers face the test of *nashtomoha* (victory over attachment)?
Baba: Are the brothers more conscious of their bodies or are the virgins and the mothers more conscious of their bodies? The virgins and the mothers are more conscious of their bodies. So, who will have more attachment for the body? The virgins and the mothers will have more attachment for the body. What are the brothers? It has been especially said about the brothers that they are *khagga* fish. If you put a *khagga* fish in boiling oil. Its skin is so thick that it will keep swimming for some time and then it will suddenly leap and fall (outside) like this. They (i.e. the brothers) do not develop attachment easily. Today they develop attachment for one, tomorrow for another one, then for a third one, and then for a

fourth one. As regards the virgins and the mothers, when they come in (physical) contact and relationship with someone for the first time in their life, they do not forget him throughout their life. Why does it happen like this? Why do the brothers forget? This is the reason.

जिज्ञासु – अंत में माताओं की बड़ी परीक्षा होती है ना।
बाबा – अंतिम में परीक्षा क्या? अभी नहीं आ रही है?
जिज्ञासु – अभी भी आ रही है।
बाबा – अंत में मल्टीप्लिकेशन हो जाता है।
जिज्ञासु – वो तो है बाबा। लेकिन नष्टोमोहा स्मृतिलब्धा बोला ना। तो कैसे स्मृतिलब्धा होता है?
बाबा – नम्बरवार स्मृतिलब्धा होगा कि अव्वल नम्बर का हो जाएगा? अरे अव्वल नम्बर का स्मृतिलब्धा हो जाएगा क्या? नम्बरवार होगा।

Student: In the end, the mothers face a big test, don't they?
Baba: Which test in the end? Are they not facing it now?
Student: They are facing even now.
Baba: Multiplication (of tests) takes place in the end.
Student: That is true Baba. But it has been said *'nashtomoha smritilabdha'* (victory over attachment and continuous remembrance), isn't it? So, how can they become '*smritilabdha*'?
Baba: Will they be numberwise *smritilabdha* or will they become number one (*smritilabdha*)? Arey, will they become number one *smritilabdha*? It will be numberwise.

समय – 41.49
जिज्ञासु– बाबा, मुरली में बोला है – बाँधेलियाँ छुटेलियों से आगे जा सकती हैं। ये छुटेलियाँ क्या होता है?
बाबा – जो बांधेलियाँ हैं, कोई ने बंधन में बाँधा हुआ है। चाहे बाँधने वाला ज्ञान में चलने वाला है और चाहे ज्ञान में न चलने वाला है; लेकिन बाँधेली को बाँधा हुआ है। वो बाँधेली के जब बंधन में डालने वाले के साथ पूर्व जन्म के हिसाब–किताब चुक्तू हो जावेंगे, चुक्तू होंगे या नहीं होंगे? जब चुक्तू हो जावेंगे तो वो ऐसे संरक्षण में आ जावेगी कि बाँधने वाला उसको बाँध ही नहीं सकेगा और वो उसके बंधन को मानेंगे भी नहीं। जो मुरली में डाइरैक्शन है। क्या? क्या डाइरैक्शन है?
जिज्ञासु – किसी को बंधन में नहीं डालना है।

Time: 41.49
Student: Baba, it has been said in the Murli, the mothers with bondages (*bandheliyan*) can go ahead of those without bondages (*chuteliyan*). What are these *chuteliyaan*?
Baba: The *bandhelis* have been bound in bondages by someone. Whether the one who creates the bondages follows the knowledge or whether he does not follow the knowledge, but he has bound the *bandheli.* When that *bandheli*'s karmic account of the past births with the one who is creating bondage is finished; will it finish or not? When they are settled, then she will come under such a protection that the one who creates bondages will not be able to bind her at all and she will not even accept his bondage. As it has been directed in the Murli. What? What is the direction?
Student: You should not bind anyone in bondage.

बाबा – नहीं। मुरली में ये डाइरैक्शन है कि लौकिक संबंधियों की मत पर न चलना है और न उनसे कोई बात पूछनी है। ऐसी आत्मा में जब पावर आ जावेगी, तो बाँधेली आत्माएँ कोर्ट में जाके खड़ी हो जावेंगी – ये हमको हमारे धर्म पे नहीं चलने देता। ये हमको बंधन डालता

है, हमारे ऊपर शक करता है, हमारे ऊपर इलजाम लगाता है। इससे लिखवाके दो कि ये हमको धर्मसम्प्रदाय में या संस्था में जाने से रोकेगा नहीं। हमको हमारे धर्म पर चलने से रोकेगा नहीं। और इसका मिसाल मौजूद है। एडवान्स पार्टी में पहली माता निकली है। कौन? सब जानते हैं। पुष्पा माता। पुष्पा माता ने अपने पति से कोर्ट में लिखवा लिया। क्या? कि हम इसको आध्यात्मिक विद्यालय में जाने के लिए पूरी स्वतंत्रता देंगे। ईश्वरीय सेवा करने के लिए हमें कभी नहीं रोकेंगे। कोर्ट में चढ़ गई और लिखवा लिया और निर्बन्धन हो गई। तो ये वाक्य लागू होता है कि नहीं जो आपने पूछा?

Baba: No. There is a direction in the Murli that we should neither follow the opinion of the lokik relatives nor should we ask them anything. When a soul acquires such power, then the *bandheli* souls will go to the court and say: He does not allow me to follow my *dharma*. He binds me in bondages. He doubts me. He levels charges against me. Ask him to give in writing that he will not stop me from visiting my religious community or institution. He will not prevent me from practicing my religion. And its example is available. A mother emerged first in the advance party. Who? Everyone knows her. Pushpa mata. Pushpa mata took a written undertaking from her husband in the Court. What? (She received a written undertaking saying) : I will give her complete freedom to go to Adhyatmik Vidyalay. I will never stop her from doing Godly service. She went to the Court and took a written undertaking and became free from bondages. So, is this sentence that you asked applicable or not?

समय– 43.56
जिज्ञासु– बाबा, बाहर कुछ गड़बड़ करेगा, कोई आदमी का मर्डर करेगा, किसी आदमी का एक्सीडेंट करेगा, तो उसके ऊपर कोर्ट में केस लगाते हैं। हर आदमी को 2 साल, 3 साल, 7 साल टाइम केस में मेजरमेंट ले रहे हैं, जेल में जाते हैं। तो हिसाब–किताब उतना ही है या फिर दूसरा बाद में हिसाब–किताब होगा?
बाबा – ये जो आज के कोर्ट हैं, उन कोर्टों में तो घूस भी चलती है, सिफारिश भी चलती है और जो कुर्सी पर बैठे हुए जज और वकील हैं, अगर मुवक्किल उनके सामने सच्ची बात कह दे तो उसके ऊपर खार भी खा जाते हैं। जानबूझकर के उसका केस उल्टा कर देते हैं। तो आज के केस जो हैं, उनमें फैसला सही मिलता है ये कोई पक्का नहीं है लेकिन ऊपर का एक कोर्ट ऐसा है जहाँ पूरा फैसला आख़रीन मिलना है। और वो आखरी टाइम अभी आ गया। सबका जन्म–जन्मांतर का फैसला अभी लास्ट फैसला होने वाला है। उस फैसले के बाद सब खुश हो जावेंगे।

Time: 43.56
Student: Baba, in the outside world if someone creates trouble, if someone murders anyone, if someone causes somebody's accident, then a case is lodged against him in the court. Every person is sentenced for 2 years, 3 years, 7 years time; they go to jail. So, is the karmic account limited to that extent or will there be another karmic account later on?
Baba: In today's courts you can give bribe, you can use recommendations, and if the clients tell the truth to the Judges and the Advocates in power, then they develop bitterness towards him. They deliberately turn the course of the case. So, it is not guaranteed that you will get correct judgement in today's case, but there is one such superior court, where ultimately you will get complete decision. And that final time has now arrived. The decision, the last judgement on everyone's many births is going to be delivered now. After that judgement everyone will become happy.

समय – 45.43
जिज्ञासु – बाबा, बाहर क्रिकेट खेल रहे हैं और भारत जीत रहा है। तो यहाँ बेहद में कैसे पता चलता है कि कौन जीत रहा है?
बाबा – यहाँ जो जीत रहा है, उसको खुशी और उमंग–उत्साह दिखाई पड़ेगा। उसकी आत्मा खुशी में रहेगी, उमंग–उत्साह में रहेगी और दूसरों की सेवा में लगी रहेगी। क्या? यहाँ जो जीतता है उसकी ये निशानी होगी। और अगर हारता है, तो अपना दुखड़ा खुद अंदर रोता रहेगा और दूसरों के सामने भी दुखड़ा रोता रहेगा। खुद डिस्टर्ब होगा और दूसरों को भी डिस्टर्ब करता रहेगा। ये प्राइज़ है। जैसे वहाँ क्रिकेट खेलने वाले जो ज्यादा जीतने वाले होते हैं, उनको प्राइज़ मिलती है। तो कितना खुशी में उछलते हैं। ऐसे यहाँ भी ये खुशी की प्राइज़ मिलती है।

Time: 45.43
Student: Baba, in the outside world cricket (tournament) is being played and India is winning. So, here how can we know as to who is winning in an unlimited sense?
Baba: The one who is winning here will experience happiness and zeal and enthusiasm. His soul will remain in happiness, will remain in zeal and enthusiasm and will remain engaged in serving others. What? This will be the indication of the one who wins here. And if he tastes defeat, then he will keep crying about his sorrows in his mind and will keep crying about his sorrows in front of others too. He will remain disturbed himself and cause disturbance for others as well. This is a prize. For example, there the cricketers who gain more victories receive a prize. So, they jump so much with a joy. Similarly, here also you receive a prize of happiness.

समय – 53.05
जिज्ञासु – ब्राह्मणों की दुनियाँ में 95 पर्सेन्ट से संतुष्टता का सर्टिफिकेट ब्राह्मण बच्चों को मिलता है। 5 पर्सेन्ट छोड़ दो।
बाबा – हाँ मिलता है। 5 पर्सेन्ट परीक्षा लेने वालों को छोड़ दो।
जिज्ञासु – तो ऐसा भी साथ–साथ बोला – धर्मराज का पार्ट किसको अच्छा लगता है? तो अष्टदेवों के लिए ये बात लागू नहीं होता है ना; क्योंकि वो सबको सन्तुष्ट करने वाले हैं।
बाबा – हाँ, ठीक है। तो क्या हुआ?

Time: 53.05
Student: In the world of Brahmins, Brahmin children obtain the certificate of satisfaction from 95 percent (souls). Leave the remaining 5 percent.
Baba: Yes, they obtain it. Leave the rest 5 percent who test us.
Student: But it has also been said: who likes the part of Dharmaraj? So, this does not apply to the eight deities, does it? Because they satisfy everyone.
Baba: Yes, it is ok. So, what happened?

जिज्ञासु – पूछ रही हूँ ये बात अष्टदेवों के लिए लागू नहीं होता है ना? वो सबसे लेते हैं ना? 5 पर्सेन्ट भी नहीं, सेन्ट पर्सन्ट लेंगे ना?
बाबा – क्या सेन्ट पर्सेन्ट लेंगे ?
जिज्ञासु – सन्तुष्टता का सर्टिफिकेट।
बाबा– आठ जो हैं, उनसे तो कोई भी सन्तुष्ट नहीं होगा। आठ से तो अज्ञानता के कारण सब जलेंगे, ईर्ष्या करेंगे कि इन्होंने ऐसा क्या किया जो इस पोस्ट पर जाकर बैठ गए। जैसे एक का सारी दुनियाँ दुश्मन बनती है, ऐसे ही आठ की सारी दुनियाँ दुश्मन बनेगी। ऐसे ही जो बाद में सौ होंगे, उनके जब पार्ट खुलेंगे तो सारी दुनियाँ उनकी दुश्मन बनेगी। ऐसे ही ब्रह्मा की हज़ार भुजाएँ। ये क्यों सहयोगी बन गए? इन्होंने ऐसा क्या किया? हम क्यों नहीं

किया? उनके दुश्मन बनेंगे। नम्बरवार हिसाब है। जो बाप के ऊपर लागू होता है वो नम्बरवार बच्चों के ऊपर भी लागू होगा।

Student: I am asking, this does not apply to the eight deities, does it? They obtain (the certificate of satisfaction) from everyone, don't they? Not even five percent, they will take cent percent, won't they?
Baba: What will they take cent percent?
Student: The certificate of satisfaction.
Baba: Nobody will be satisfied with the eight. Because of ignorance, everyone will be jealous of the eight (thinking) what did they do that they achieved this post? Just as the entire world becomes the enemy of one, similarly the entire world will become the enemy of the eight. Similarly, when the parts of the hundred are revealed later on, the entire world will become their enemy. Similarly, the hundred who emerge later on, when their parts are revealed, the entire world will become their enemy. Similarly, the thousand arms of Brahma. (The others will think) 'Why did they become helpers? What did they do? Why did we not do?' They will become their enemies. There is numberwise karmic account. Whatever applies to the Father applies to the numberwise children as well.

47.30– 50.44
जिज्ञासू – दक्ष प्रजापिता को 22 कन्याऐं थें। 21 नक्षत्र कन्याओं की चंद्र के साथ विवाह किया। मगर उन्होंने तो रोहीणी को ही सारा प्यार बाटाँ मगर बाकी 20 कन्याओं को नहीं बाटाँ इसीलिए दक्ष प्रजापिता ने श्रापित किया। ऐसा ही यहाँ बिजरूप दुनियाँ में कैसा फाऊन्डेशन पड़ता है?

Student asked – Daksh Prajapita had 22 *kanyas* (daughters). He made his 21 *nakshatra* (stars) *kanyas* marry moon. But he (moon) gave all the love to Rohini and did not give love to the rest of the 20 *kanyas* (wives). That is the reason Daksh Prajapita cursed him (the moon). Similarly, how is the foundation laid here in the seed world?

बाबा – कोई प्वाइन्ट होता है तुरंत उसका जवाब दिया जा सकता है। और कोई प्वाइन्ट का प्रूफ नहीं है इसीलिए तुरंत जवाब भी नहीं दिया जा सकता। अभी प्रैक्टिकल होना है। इसीलिए उसका जवाब नहीं दिया जा सकता। और सब बातों का अभी जवाब देवें तो आगे चलके क्या पढ़ाई पढ़ावेंगे।

Baba – There is some point which can be answered immediately. And there isn't proof for some (other) point; that is why it cannot be answered immediately. It is yet to happen in practical. That is why it cannot be answered. And if the answers for all the topics are given now then what will be taught in the future.

जिज्ञासू – बाबा ने बताया है ना। सारे सागर को स्याही कर दो, सारे जंगल को कलम बना दो। फिर भी ये ज्ञान कम नहीं होने वाला है।

Student asked – Baba has said, hasn't He? Turn/make the entire ocean into ink; make the entire jungle into pens. Even so this knowledge is not going to end.

बाबा – वो किसके लिए?
Baba – For whom is it (said)?

जिज्ञासू – ज्ञान के विषय में ही तो बोला है।
Student asked – It said has been regarding the very knowledge.

बाबा – वो किसके लिए? वो सबके लिए या एक के लिए?
Student asked - For whom was it (told)? Was it said for everyone or for just one?

जिज्ञासू – ये तो स्पष्ट नहीं किया है कि सबके लिए है या एक के लिए।
Student asked - It has not been made clear, whether it is for everyone or for just one.

बाबा – हाँ, एक जो है वो सम्पूर्ण हप करने वाला है। उसका गायन क्या है, उस ऋृषी का? जिसने सागर को हप कर लिया। भले सारे सागर से ज्ञान लिखा गया, स्याही बनाकर। और सारी दुनियाँ में जंगल में जितनी भी लकड़ीयाँ थी उनकी कलमें बनाकर लिखा गया। लेकिन सारा का सारा ज्ञान किसने हप कर लिया? अगस्त ऋृषी ने। एक का गायन है सागर को हप्प करने का। लेकिन कलश रख दिया चिड़ियों के ऊपर। किसने हप्प किया ? चिड़ियों ने सागर को हप्प कर लिया।

Baba – Yes, there is One who gobbles it up completely. What is the praise for that sage who gulped the ocean? Although the knowledge was written by making ink of the entire ocean and by making pens from all the wood which were in the jungle, who gulped the entire knowledge? Sage Agasthya (gulped it). It is the praise of the one who gulped the ocean. But the *kalash* (pot) was kept on the birds. Who gulped it? The birds gulped the ocean.

जिज्ञासू – बाबा, कलश तो कन्या–माताओं को दिया गया है। तो फिर उन लोगों को हड़पना चाहिए ना। कन्याऐं–माताऐं हड़पते रहते है ना।
Student asked – Baba, *kalash* is given to the virgins and mothers. Then they should gobble/take it shouldn't they? Virgins and mothers keep on taking/gobbling it, don't they?

बाबा – हाँ। लेकिन पवित्रता को धारण करने वाली बात है। पवित्रता को धारण जिसने कर लिया तो कहेंगे हप्प कर लिया। पवित्रता को धारण ही नहीं किया और कामइन्द्रीय से बहा दिया। तो कलश किसको देना चाहिए ? कन्याओं–माताओं को देना चाहिए या जिसने बहा दिया उसको देना चाहिए? भगवान का काम किसने सम्पन्न किया होगा? धारण करने वाले ने किया होगा या जिसने धारणा किया ही नहीं उसने किया होगा? कन्याओं–माताओं को मिलना चाहिए।

Baba – Yes, but it is about inculcating purity. The one who inculcated purity, it will be said that he gulped it. If (he) did not inculcate purity at all and made it flow through the sex-organs; then who should be given the *kalash*? Should it be given to the virgins and mothers or should it be given to the one who made it flow away? Who would have completed the work of God? Would the one who would have inculcated it, done it or the one who did not inculcate it at all would have done it? It should be given to the virgins and mothers.

जिज्ञासू – मगर बाबा, काम विकार को तो शंकर को ही दिखाते हैं कि भसम किया।
Student asked - But Baba, only Shankar is shown to have burnt lust into ashes.

बाबा – जो भसम करेगा वो उसको सम्पन्न भी करेगा। जो पैदा करेगा वो समाप्त भी करेगा। समाप्त नहीं करेगा तो पैदा भी नहीं करेगा।

Baba – The one who will burn it into ashes will also complete it. The one who will generate it will also finish it. If he won't finish it, he will not generate it either.

35.37
जिज्ञासू – बाबा, एक राजा प्रजा के ऊपर कानून करेगा। तो उस कानून पर जैसे प्रजा चलती है तो राजा भी चलेगा या नहीं चलेगा?.....

Student asked – Baba, if a King makes law for the subjects, like the subjects will the King himself follow that law or will he not?

बाबा – इनकी बुद्धि देखो कहाँ पहुँच रही है। सुना, ये अब क्या कह रहे है? ये कह रहे हैं कि राजा जो कानून निकालेगा। उस राजा, कानून निकालने वाला उस कानून को खुद फॉलो करेगा या नहीं करेगा? खुद फॉलो करेगा। लेकिन हम ऐसा देख रहे हैं .....। वो भाई कह रहे हैं – हम ऐसा देख रहे हैं यहाँ राजा कानून निकालता है कि ऐसा करो लेकिन खुद उसके ऊपर लागु नहीं हो रहा है। वो खुद उस कानून को मानता नहीं है। ऐसे ही है ना? हाँ, हाँ । पकड़ा गया। कौनसी पार्टी से होकर के आया है?

Baba – See, where his intellect is reaching. Did you listen, what is he saying now? He is saying that will the King who made the law himself follow it or not? He himself will follow it. But … I am seeing that…… That brother is saying so… "I am seeing that here the King makes a rule 'do like this' but it is not being applied over him. He himself doesn't believe in that rule." It is like this, isn't it? Yes, yes. You are caught. Which party have you visited?

जिज्ञासू – हम राजा का बात पूछा है ना।
Student – I have asked about the King, haven't I?

बाबा – वो ही तो। ये बात जो है यहाँ ज्यादा लागू होती है कि दूसरी संस्थाओं में ज्यादा लागू होती है? अरे बोलो–बोलो। धढ़ाके से बोलो। बोलो भाई। कहाँ की बात है?

Baba – That is the thing. Is this concept more applicable over here or over other institutions? Arey, speak up! Speak with full force. Speak brother. Where is it about?

किसी ने कहा विष्णू पार्टी की बात है।
Someone said – it is about Vishnu party.

बाबा – अरे उनके खुद के मुख से बोलने दो ना।
Baba – Arey ! Let him speak through his own mouth.

जिज्ञासू – हम शिव का पार्टी है।

Student – I am of Shiv party.

बाबा – हम शिव की पार्टी है? शंकर के पार्टी में नहीं?
Baba – "I am of Shiv party?" Not in the Shankar party?

जिज्ञासू – शिव अलग है, शंकर अलग है क्या?
Student – Are Shiv & Shankar different?

बाबा – शिव–शंकर एक ही है? ये तो भक्तिमार्ग में बताया। भक्तिमार्ग में क्या बताते हैं? शिव–शंकर एक ही है। और हम क्या बताते हैं? शिव अलग है और शंकर अलग है। एक बताते हैं कि अलग–अलग बताते हैं? हम तो अलग–अलग बताते हैं।

Baba – Is Shiv Shankar one? It is said in the path of worship. What do they say in the path of devotion? Shiv - Shankar is one. And what do we say? Shiv is different and Shankar is different. Do we say them as one or do we say them to be different? We say them to be different.

जिज्ञासू – शिव में शंकर प्रवेश है ना।
Student – Shiv is entered in Shankar, isn't it?

बाबा – शिव में शंकर प्रवेश है? वाह! भैया। उल्टी खोपडी हो गई। ये तो शंकर बड़ा पावरफुल हो गया। शंकर ने शिव की बुद्धि को भी मरोड़ दिया।

Baba – Is Shiv entered in Shankar? Wonderful brother! Your intellect has turned upside down. This is as if Shankar became very powerful. Shankar even turned the intellect of Shiv.

जिज्ञासू – शंकर में प्रवेश है या नहीं?
Student – (Is Shiv) entered in Shankar or not?

बाबा – किससे पूछ रहे हैं? शंकर में शिव प्रवेश है या नहीं ये दिखाई पड़ने की बात है। ये कोई कहने की बात थोड़े ही है। किसी को दिखाई पड़ता है कि शंकर में शिव प्रवेश है। और कोई को दिखाई नहीं पड़ता है। जिसको दिखाई पड़ता है उसकी पहचान क्या होगी? शंकर में शिव प्रवेश करता है और ये बात जिसको दिखाई पडती हैं, उसकी पहचान यह होगी कि वो समझेगा कि शिव शंकर में प्रवेश करके जो कानून बना रहा है। वो कानून को खुद भी फॉलो करता है। और दूसरे बच्चों से भी फॉलो कराना चाहता है और कराता है। और कराके ही वापस जावेगा। और जिसकी बुद्धि में ये बात नहीं बैठी होगी वो इसको जस्ट उल्टा समझेगा। और उसको बार–बार प्रश्न आएगा क्या? कि अरे कोई राजा है। कानून बनाता है। और खुद कानून को फॉलो नहीं करता है। ऐसा कहाँ होता है? कहाँ होता है? विष्णु पार्टी में कि शंकर पार्टी में?

Baba – Whom are you asking? Is it something to be seen that Shiv's entrance is in Shankar? It is not about saying. It is visible to some that Shiv has entered in Shankar and it isn't visible to some. What is the identification of the one for whom it is visible? The identification of the one for whom it is visible that Shiv has entered in Shankar…..; the identification will be that

he will understand that whatever rule Shiv is making by entering Shankar, He follows that rule himself too. He also wants to enable as well as enables the other children to follow it. And he will go only after he has enabled them to do it. And the one in whose intellect this topic wouldn't have been fixed will understand just the opposite of it. And this question will come to him again and again, what? That, 'Arey there is some King. He makes rules. And he himself doesn't follow it.' Where does it happen? Where does it happen? Does it happen in Vishnu party or Shankar party?

जिज्ञासू – विष्णु पार्टी में होता है कि कहाँ होता है। हमको पता नहीं है।
Student – I don't know, whether it happens in Vishnu party or somewhere else

बाबा – तुमको पता नहीं? फिर पूछता कहाँ से है?
Baba – **When you** don't know, where do you ask from?

जिज्ञासू – मालूम करने के लिए पूछता है।
Student – I just asked for knowing.

बाबा – मालूम नहीं है? पूछता है ?
Baba – **You** don't know and ask.

बाबा – हाँ तो तुम्हारे कान में ये बात किसने डाली?
Baba – Yes, so who put this topic in your ear?

जिज्ञासू – कोई भी डाला नहीं।
Student – Nobody put it.

बाबा – कोई भी डाला नहीं। तो अपने आप कैसे पैदा हो गई? ऐसा कहीं होता है कि कोई राजा खुद कानून बनाए। और उस कानून को खुद फॉलो नहीं करे। तो राजा बन जाएगा? बन ही नहीं सकता।

Baba – Nobody put it. So how did it arise by itself? It doesn't happen that a King makes rule and he himself doesn't follow that rule. Then will he become a King? He cannot become at all.

जिज्ञासू – ऐसे राजाऐं भी हैं ना।
Student – There are some Kings like that, aren't they?

बाबा – तो उनका शासन ज्यादा चलेगा नहीं। आज की गवर्नमेन्ट खुद कानून बनाती है खुद उस कानून को तोड़ देती है। आज बनाती है कल तोड़ देती है। तो नाम मात्र की राजाई चल रही है काम चलाऊ राजाई चल रही है। या स्थायी चल रही है?

Baba – Then their rule won't last long. Today's government makes a rule and breaks it on its own. It makes the rule today and breaks it tomorrow. So the kingship is going on just for name sake, just for the work to go on, or is it going in a stable way?

जिज्ञासू – ..... वो कानून चलेगा या नहीं चलेगा ये पूछा है ना। .....
Student – …….. I asked, whether that rule will go on or not, didn't I?

बाबा – जो खुद फॉलो करेगा खुद प्रैक्टीकल जीवन में चलेगा। वो ही दूसरों के ऊपर चला पाएगा। नहीं तो नहीं चला सकता। ये तो प्रैक्टीकल ज्ञान है। जो खुद धारण नहीं करेगा वो दूसरों के ऊपर धारणा नहीं कराए सकता। हाँ, कोई समझे और कोई न समझे। कोई कितना समझे, कोई कितना ना समझे वो एक अलग बात है। न समझने वाला धक्का खाता रहेगा। आज इधर धक्का खाएगा कल दूसरी पार्टी में धक्के खाएगा। और समझने वाला धक्का खाएगा? बिल्कुल धक्के नहीं खाएगा। अब अपने–अपने दिल से पूछो–हम किस ग्रुप में हैं।

Baba – The one who will himself follow it, will follow it in his practical life, only he will be able to apply it on others. Otherwise, he cannot apply it (on others). This is practical knowledge. The one who doesn't inculcate it cannot make others inculcate it. Yes, some understand and some don't. It is a different subject, how much one understood and how much another one didn't. The one who does not understand will keep suffering blows. He will suffer a blow here today and in another party tomorrow. And will the one who understands suffer blows? He will not suffer blows at all. Now ask your own heart, to which group do we belong.

……
Note: The words in italics are Hindi words. Some words have been added in the brackets by the translator for better understanding of the translation.